सृजनः वार्षिक प्रतिवेदन

(21 नवम्बर 2009 - 15 नवम्बर 2010 तक)

छात्राओं की सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने के लिए 'कमला नेहरू कॉलेज' की सृजनात्मक लेखन समिति- 'सृजन' पिछले अनेक वर्षों से निरन्तर प्रयासरत है। छात्राओं की अंतः प्रलुप्त सृजन प्रतिभा के उन्मेष हेतु इस वर्ष का शुभारम्भ 'अंतर्महाविद्यालय रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता' के सफल आयोजन द्वारा किया गया। 25 नवम्बर 2009 को आयोजित इस 'अंतर्महाविद्यालय रचनात्मक लेखन प्रतियोगिता' में राजधानी दिल्ली के आठ प्रमुख महाविद्यालयों के कुल 18 प्रतियोगियों ने प्रतिभागिता की। प्रतियोगिता की निर्णायक थीं- सुप्रसिद्व लेखिका डॉ. संतोष गोयल एवं डॉ. सुनीति रावत। 'लेडी श्रीराम कॉलेज' की कनिका घोचा को प्रथम, 'कमला नेहरू कॉलेज' की हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष की छात्राओं संध्या को द्वितीय तथा आरती प्रजापति को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया।

10 दिसम्बर 2009 को 'अंतर्महाविद्यालय मौलिक कविता-पाठ प्रतियोगिता' का कुशल आयोजन किया गया जिसमें 'कमला नेहरू कॉलेज' की इतिहास विशेष, तृतीय वर्ष की छात्रा रिंकी तथा हिन्दी विशेष, द्वितीय वर्ष की रेनू ने कॉलेज का प्रतिनिधित्व किया।

अतीव लोकप्रिय श्रृंखला 'लेखक से मुलाकात' के अंर्तगत ' सृजन एवं हिन्दी साहित्य परिषद्' के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'समापन समारोह' में इस वर्ष दूरदर्शन दिल्ली के बहुचर्चित प्रोड्यूसर डॉ. अमरनाथ अमर को आमंत्रित किया गया। इस अवसर पर 4 मार्च 2010 को 'टी.वी. पत्रकारिता में करियर के अवसर' विषय पर बोलते हुए डॉ. अमरनाथ अमर ने इस क्षेत्र की व्यावहारिक एवं जमीनी हकीकत से छात्राओं को अवगत कराया। इस आयोजन में पिछले वर्ष की विविध प्रतियोगिताओं में पुरस्कृत सभी विजेता छात्राओं को पुरस्कार प्रदान किए गए।

नए सत्र की शुरूआत के साथ पुनः एक बार सृजन नवोत्साह से भर कार्यरत हुआ। 16 सितम्बर 2010 को 'मौलिक कविता-पाठ प्रतियोगिता' का कुशल आयोजन किया गया जिसमें नवागत छात्रा वर्ग के अंतर्गत बी.कॉम. प्रथम वर्ष की छात्रा मनप्रीत को तथा द्वितीय वर्ग के अंतर्गत हिन्दी विशेष तृतीय वर्ष की रेनू को प्रथम पुरस्कार दिया गया। डॉ. संगीता वर्मा एवं सुश्री कांति मीना प्रतियोगिता की निर्णायक थीं।

इस वर्ष हिन्दी के चार मूर्धन्य कवियों- 'अज्ञेय', 'शमशेर', 'नागार्जुन' एवं 'केदारनाथ अग्रवाल' का जन्म-शताब्दी वर्ष है। अतएव 30 सितम्बर 2010 को एक भावभीनी काव्यसंध्या का आयोजन किया गया जिसमें छात्राओं एवं अध्यापिकाओं ने मिलकर उपर्युक्त चारों कवियों की सुप्रसिद्ध कविताओं का सस्वर पाठ किया और काव्य रस का आकण्ठ पान किया।